सद्गुरु-प्रसाद

सद्गुरु-प्रसाद

परमपूज्य परमसंत
श्री रामसिंहजी महाराज
के उर्दू में लिखित आध्यात्मिक लेखों
का व्याख्या सहित हिन्दी अनुवाद

राम समाधि आश्रम
मनोहरपुरा (जगतपुरा)
जयपुर

प्रकाशक :

राम समाधि आश्रम

मनोहपुरा (जगतपुरा), जयपुर

© प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण 1997
द्वितीय संस्करण 2008
तृतीय संस्करण 2010
चतुर्थ संस्करण 2012

मूल्य : ₹ 10/-

प्राप्ति स्थानः

राम समाधि आश्रम

मनोहपुरा (जगतपुरा), जयपुर
मो. 94616 00003, 99820 76750
98282 69273

कम्प्यूटर टाईप सेटिंग व प्रिंटिंग

इन्टरनेशलन स्कूल ऑफ एस्ट्रोलोजी एण्ड डिजाइन सांइसेज

(प्रकाशन विभाग)

'रामाश्रम' 3/18, मालवीय नगर, जयपुर - 302017
मो. : 94134 44188, फोन : 0141-2521849
Web : *www. astrologynspiritualism.com*

प्राक्कथन

परम पूज्य परमसंत श्री रामसिंहजी का सम्पूर्ण जीवन अध्यात्म की खुली पुस्तक है, जिसका प्रत्येक शब्द अनहद्नाद की भाँति हमें विभोर कर देता है। आपकी प्रत्येक क्रिया ईश्वरीय थी जो श्रद्धालु भक्तों को आदर्श की ओर अग्रसर करती थी। प्रत्येक दैवी गुण आप में मूर्तरूप में दिखाई देता था। जिन महानुभावों को आपके सान्निध्य का सौभाग्य मिला है; वे आपकी सादगी, निश्छल प्रेम और एकरस जीवन का आभास कर कृत-कृत्य हुए हैं। आपकी उदारता कल्पनातीत थी। आपके निकट बैठने मात्र से मन के कलुष पिघल कर बह जाते थे। आडम्बर कहीं ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलता था। हकीकत यह थी कि आप छोटे-बड़े सभी में अपना अथवा अपने प्रभु का दर्शन कर हर घड़ी उसकी सेवा में संलग्न रहते थे।

अहम् आप को स्पर्श तक नहीं कर पाया। अपने गुरु महाराज के प्रति आपका अबोध शिशुवत समर्पण अद्वितीय था। वस्तुतः आप विदेह बन सभी सीमायें लाँघ चुके थे। गृहस्थ की सभी जिम्मेदारियों का यथावत् निर्वाह करते हुए भी आप पूर्णतः निर्लिप्त रहे।

पुलिस विभाग में रहकर सच्चाई एवं कर्त्तव्यपरायणता का जो निर्वाह आपने किया है वह सतयुग की कल्पना से भी परे है।

यह पुस्तक परम पूज्य श्री रामसिंहजी द्वारा उर्दू में लिखित आध्यात्मिक लेखों का व्याख्या सहित हिन्दी अनुवाद है। इस पुनीत कार्य को श्रद्धेय श्री बालकुमार खरे जी ने किया है। आप समर्थ सद्गुरु महात्मा श्री रघुवरदयालजी महाराज के शिष्य हैं। आप राजकीय बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज, वाराणसी में प्राचार्य थे और उर्दू व फारसी भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। राम समाधि आश्रम आपका हृदय से आभार ज्ञापित करता है।

परम पूज्य श्री रामसिंहजी के लेखों में कोष्ठक में जो शब्द दिये गये हैं वह भावार्थ को स्पष्ट करने के लिए या तारतम्य बनाये रखने के लिए जोड़े गये हैं। मूल लेख गहरे (Bold) अक्षरों में दिया गया है तथा व्याख्या सामान्य (Normal) अक्षरों में दी गई है। यह इसलिए किया गया है कि परम पूज्य श्री रामसिंहजी के मूल लेख और व्याख्या में विभेद किया जा सके।

- प्रकाशक

अनुक्रमणिका

क्रम	प्रसंग	पृष्ठ
1.	प्रार्थना	1
2.	सन्तमत और सद्गुरु	2
3.	मेरे गुरु-भगवान का आदर्श-जीवन	6
4.	मेरे गुरु-भगवान की अमृतवाणी	9
5.	परमानन्द की अमृतधारा	12
6.	वैष्णव धर्म की व्याख्या	18
	- वैष्णव भक्त की दशा	19
	- भक्त की अभिलाषा	19
7.	भक्त की होली	20
8.	भक्त और नास्तिक में भेद	25
9.	भगवद्-प्रेम की महिमा	31
10.	आत्मनिवेदन	34